दैनिक नया इंडिया, भोपाल

~~दैनिक नईदुनिया, भोपाल~~

19 MAY 2017

हो सके तो अनिल जी फिर लौटें...

■शिवराज सिंह चौहान

भरोसा नहीं होता है कि अनिल दवे जी अब हमारे बीच नहीं हैं। वे अद्भुत व्यक्तित्व के धनी, नदी संरक्षक, पर्यावरणविद, मौलिक चिंतक, कुशल गठक थे। अनिल जी मौलिक लेखक थे। वे कल्पनाशील मस्तिष्क धनी थे। उन्होंने अनेक किताबें लिखीं। वे असाधारण रणनीतिकार । बचपन से ही अपना जीवन भारत माता के चरणों में समर्पित र दिया। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक के नाते पूरा ीवन, देश और समाज की सेवा में समर्पित कर दिया।

अनिल जी को जो भी दायित्व मिला, उनको पूरा किया। संघ ी योजना के अनुरूप वे भोपाल विभाग के प्रचारक थे और मैं नका स्वयं सेवक रहा। वे सबका ध्यान रखते थे। मुझे याद है कि जब मेरा एक्सीडेंट हुआ था तब उन्होंने मेरा आपरेशन मुम्बई में डॉ. ढोलकिया के हाथों से ही करवाना सुनिश्चित किया था। वे अपने कार्यकर्ताओं का हमेशा ध्यान रखते थे। सदैव कार्य में रमे रहते थे। कुशल रणनीतिकार थे। 2003, 2008 व 2013 के विधानसभा व लोकसभा के चुनाव उनकी कुशल रणनीति के कारण हम जीते, मैं यह कहूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विजय में उनका उल्लेखनीय योगदान था। सदैव काम में लगे रहने वाले, रमे रहने वाले एवं मां नर्मदा के वे ऐसे भक्त थे कि उन्हें जब भी समय मिलता था, मैय्या के तट पर पहुंच जाते थे। वे पायलट थे। उन्होंने नर्मदा की परिक्रमा छोटे विमान से की थी, फिर राफ्ट से गुजरे थे। इस दौरान नर्मदा संरक्षण के लिए गांवों में संरक्षण चौपाल-बैठकें की थीं। बांद्राभान में नर्मदा महोत्सव का प्रति दो वर्ष में आयोजन करते थे। मैं भी उसमें भाग लेता था। नर्मदा सेवा यात्रा का विचार जब मैंने उन्हें बताया था तो वे बहुत प्रसन्न हुए थे। मेरी बहुत इच्छा थी कि वे नर्मदा सेवा यात्रा में आयें और वे ९ मई को यात्रा में आए। उन्होंने नदी जल और पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में 8 मई को भोपाल में भाग लिया था। परसों उनसे मेरी बात हुई थी। मैंने बताया कि अमरकंटक कार्यक्रम बहुत अच्छा हुआ। मैंने उन्हें कहा कि आगे की योजनाएं बनाइए, हमें मिल कर उन्हें पूरी करना है। बहुत अल्पसमय में पर्यावरण एवं वन मंत्री होने के नाते अस्वस्थ होने के बाद भी उन्होंने बड़ी दक्षता एवं प्रशासनिक कुशलता का परिचय दिया था। भारतीय संस्कारों में पले-बढ़े अनिल जी अब हमारे बीच नहीं हैं, सहज भरोसा नहीं होता। उनके निधन से हमने कुशल संगठक, नदी संरक्षक, पर्यावरणविद एवं एक नेतृत्व जो देश के लिए समर्पित था उसे खोया है। उनका जाना प्रदेश व देश के लिए अपूरणीय क्षति है। लेकिन व्यक्तिगत रूप से मेरी क्षति है। मैं सदमे में हूं। लेकिन नियति पर किसी का बस नहीं है। उनकी वसीयत मिली है जिसमें उन्होंने कहा है कि यदि संभव हो तो उनका अंतिम संस्कार बांद्राभान में नदी महोत्सव के स्थान पर किया जाए। अंतिम संस्कार वैदिक रीति से करें एवं उनकी स्मृति में स्थल का नामकरण, पुरस्कार, प्रतियोगिता आदि का आयोजन न करें। अगर कुछ करना है तो पेड़ लगाएं और उन्हें संरक्षित कर बड़ा करें एवं नदी-तालाब के संरक्षण का कार्य करेंगे तो उन्हें आनंद होगा और ये करते हुए भी उनके नाम का उल्लेख न करें। एक महामानव ही इस तरह की वसीयत लिख सकता है।मैं उनके चरणों में प्रणाम करता हूं। भगवान ने श्रीचरणों में उनको स्थान दिया है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति दे। मेरे जैसे हजारों कार्यकर्ता एवं परिजनों को यह गहन दुख सहन करने की क्षमता दे। हो सके तो अनिल जी फिर लौटें...

(लेखक मप्र के मुख्यमंत्री हैं)